तृतीयः पाठः - शिशुलालनम् (नाटक)

1. पाठ परिचय

यह पाठ महाकवि दिङ्नाग रचित संस्कृत नाटक **'कुन्दमाला'** के पाँचवें अंक से लिया गया है। इस पाठ में भगवान राम, और उनके पुत्रों लव तथा कुश के बीच का मधुर संवाद है। इसमें वात्सल्य रस (शिशु प्रेम) की प्रधानता है।

2. कथा प्रसंग

राम अपने दरबार में बैठे हैं। तभी विदूषक (जोकर/मित्र) के साथ तपस्वी वेश में दो अत्यंत सुंदर बालक (लव और कुश) प्रवेश करते हैं। उनका सौंदर्य देखकर राम उनकी ओर आकर्षित होते हैं और उनसे कुशलक्षेम पूछते हैं।

सिंहासन पर बैठाने का आग्रह: राम बच्चों के सुंदर रूप से इतने प्रभावित होते हैं कि वे उन्हें अपने सिंहासन पर (अपनी गोद में) बैठाना चाहते हैं। लेकिन लव-कुश बड़ी ही विनम्रता से मना कर देते हैं (राजसिंहासनं खल्वेतत्, न युक्तमध्यासितुम्)। राम कहते हैं कि बच्चों का रूप इतना प्यारा होता है कि वे सम्माननीय होते हैं, जैसे चंद्रमा शिवजी के मस्तक पर सुशोभित होता है।

वंश और गुरु का परिचय: राम उनके वंश के बारे में पूछते हैं। वे बताते हैं कि वे 'सूर्यवंशी' हैं। राम पूछते हैं कि आपके गुरु कौन हैं? वे बताते हैं कि महर्षि वाल्मीकि उनके गुरु हैं और उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत) के कारण वे उनके गुरु हुए।

माता-पिता का नाम: राम उनके पिता का नाम पूछते हैं। लव कहता है कि वह पिता का नाम नहीं जानता। तपोवन में कोई भी उनका नाम नहीं लेता। कुश बताता है कि उनके पिता का नाम 'निर्दय' (निरनुक्रोश) है। राम आश्चर्यचकित होते हैं। कुश स्पष्ट करता है कि जब वे दोनों बचपन में कोई शैतानी करते हैं, तो उनकी माता (सीता) उन्हें क्रोध में डाँटती हैं कि "अरे निर्दय के पुत्रों! ऐसा मत करो।" यह सुनकर राम को संदेह होता है कि कहीं ये उनके ही पुत्र तो नहीं हैं।

अंत में राम कहते हैं कि इन दोनों का रूप और बातें मेरे ही समान हैं, और यह सोचकर उनका हृदय भर आता है।